

class - B.A. Part-I

Sub - Hindi (Hons) Paper-I

Written by Raushan Kumar

R B Gar college Mahayog

(1) हिन्दी साहित्य के इतिहास एवं काल

Ans - विभाजन पर प्रकाश डालने के पूर्व यद्यपि उन्नीसवीं शती के पूर्व अनेक ग्रंथों की रचना की गयी जिसमें कवियों के जीवन वृत्त एवं कृतिव्य का परिचय दिया गया। उदाहरण के लिए 'चौरासी वैष्णव की वार्ता', 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता', 'भक्तमाल', 'कविमाला' का लिदास 'हजारा' आदि किन्तु उसमें काल विभाजन को कहीं भी जिक्र नहीं किया गया है। यही कारण है कि इसे इतिहास की श्रेणी में नहीं रखा जा सकला

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास प्राचीन विद्वान गार्गा दे वासी ने किया।

उन्होंने 'इसवार दत्त लितरेव्युर सुंदर से सुस्वानी नामक ग्रंथ' की रचना की। इसमें हिन्दी

एवं उर्दू के अनेक कवियों का वृत्तानुसार परिचय दिया गया है। इसका प्रथम भाग 1839 ई.

में तथा दूसरा भाग 1847 ई.

में प्रकाशित हुआ। परंतु इस

ग्रंथ में काल विभाजन का प्रयास नहीं किया गया।



हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का दूसरा प्रयास शिवसिंह सैंगर ने किया। उन्होंने 1883 ई. में 'शिवसिंहसरोज' नामक ग्रंथ की रचना की, किंतु इसमें भी काल विभाजन एवं नामकरण नहीं किया गया है। अतः इस ग्रंथ में इतिहास की श्रेणी में रखने में संकोच है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का तीसरा प्रयास जॉर्ज ग्रियर्सन ने किया। उन्होंने सन् 1888 ई. में 'मॉडर्न वनीकुलर लिटरेचर ऑफ़ ऑफ हिन्दुस्तान' नामक ग्रंथ की रचना की। यह ग्रंथ अंगरेजी भाषा में होने के कारण हिन्दी साहित्य के प्रथम इतिहास ग्रंथ के रूप में चर्चित है। क्योंकि इस ग्रंथ में पहली बार लेखकों एवं कवियों का काल-क्रमानुसार वर्णन करते हुए उनकी प्रवृत्तियों को भी उद्घृत करने का प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का चौथा प्रयास मिश्र बंधु ने किया। उन्होंने 1913 ई. में 'मिश्रबंधु विनोद' नामक ग्रंथ अपने इस ग्रंथ को मिश्र बंधु ने संज्ञा न देते हुए भी इतिहास की बात का प्रयास किया। ग्रंथ के आदर्श इतिहास के इस परिपूर्ण रूप को देखते हुए